

रेलवे का महा-बदलाव! 40 साल पुराना टिकट सिस्टम बंद, अब मलिंगी कंफर्म टिकट

वषिय सूची (Table of Contents):

- >> रेलवे का महा-बदलाव 40 साल पुराना पैसेंजर रजिस्ट्रेशन सिस्टम (PRS) होने जा रहा रटि...
- >> क्या है मौजूदा पीआरएस (PRS) और इसे बदलना क्यों था जरूरी?...
- >> मौजूदा सिस्टम की सीमाएं ...
- >> नई क्लाउड तकनीक लेगी पुरानी ओपन वीएमएस (OpenVMS) प्रणाली की जगह...
- >> सुपरफास्ट बुकिंग एक मिनट में 1.5 लाख टिकट बुक करने की होगी क्षमता...
- >> बुकिंग क्षमता में 5 गुना से अधिक की बढ़ोतरी ...
- >> त्योहारों पर नहीं होगा सर्वर डाउन, ट्रेन सर्च करने की रफ्तार होगी 10 गुना तेज...
- >> फ्लाइट की तरह पर मलिंगी सुवधा यात्री खुद चुन सकेंगे अपनी मनपसंद सीट...
- >> फेयर कैलेंडर, क्षेत्रीय भाषाओं का सपोर्ट और दवियंगजनों के लिए वशिष सुवधाएं...
- >> महत्वपूर्ण नए फीचर्स की सूची ...
- >> अगस्त से लागू हो सकता है नया सिस्टम, कंफर्म टिकट और रफिंड की प्रक्रिया होगी आसान...
- >> नष्कर्ष (Conclusion)...
- >> महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर...

भारतीय रेलवे (Indian Railways) अपने करोड़ों यात्रियों के लिए एक क्रांतिकारी कदम उठाने जा रहा है। आने वाले समय में ट्रेन टिकट बुक करने, सीट की उपलब्धता जांचने और रफिंड पाने का तरीका पूरी तरह से बदलने वाला है। रेलवे प्रशासन अगस्त महीने से अपने चार दशक पुराने पैसेंजर रजिस्ट्रेशन सिस्टम (PRS) को अपग्रेड करने की तैयारी कर चुका है, जिससे आम यात्रियों को त्योहारों के सीजन में सबसे ज्यादा राहत मिलने वाली है।

रेलवे का महा-बदलाव: 40 साल पुराना पैसेंजर रजिस्ट्रेशन सिस्टम (

भारतीय रेलवे का मौजूदा पैसेंजर रजिस्ट्रेशन सिस्टम (PRS) साल 1986 में शुरू किया गया था। पछिले लगभग 40 वर्षों से यही नेटवर्क पूरे देश में टिकट बुकिंग की रीढ़ बना हुआ है। समय के साथ बढ़ती आबादी और इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या के कारण यह पुरानी तकनीक अब हांफने लगी है, जिसके कारण रेलवे ने इसे पूरी तरह से रटायर करने का ऐतहासिकि नरिणय लिया है।

इस बड़े तकनीकी बदलाव के बाद यात्रियों को तत्काल टिकट बुकिंग (Tatkal Ticket Booking) के समय होने वाली भारी दक्कतों से हमेशा के लिए नजात मिलि जाएगी। यदि आप देश के अन्य बड़े सरकारी अपडेट्स या नौकरियों के बारे में जानना चाहते हैं, तो हमारी वेबसाइट परयूपी में नया मेगा प्लान और वैकेंसीकी ताजा जानकारी देख सकते हैं।

क्या है मौजूदा पीआरएस (PRS) और इसे बदलना क्यों था जरूरी?

पैसेंजर रजिस्ट्रेशन सिस्टम (PRS) वह मुख्य केंद्रीय कंप्यूटर नेटवर्क है, जो रेलवे के सभी ऑफलाइन काउंटर्स, आईआरसीटीसी (IRCTC) की आधिकारिक वेबसाइट और मोबाइल ऐप को आपस में जोड़ता है। वर्तमान में देश की लगभग 88% ट्रेन टिकटें इसी सिस्टम के माध्यम से ऑनलाइन बुक की जाती हैं।

मौजूदा सिस्टम की सीमाएं:

- >> वेटिंग लिस्ट और कोटा मैनेजमेंट: पुराना सिस्टम भारी लोड के दौरान वेटिंग लिस्ट और विभिन्न कोटे की गणना करने में अधिक समय लेता है।
- >> सीट उपलब्धता (Seat Availability): पीक ऑवर्स में जब लाखों लोग एक साथ सीट स्टेटस चेक (Status Check) करते हैं, तो सर्वर धीमा हो जाता है।
- >> तकनीकी सीमा: वर्तमान इंफ्रास्ट्रक्चर आधुनिक इंटरनेट ट्रैफिक और अत्यधिक अनुरोधों (Requests) को संभालने में पूरी तरह सक्षम नहीं रह गया है।

नई क्लाउड तकनीक लेगी पुरानी ओपन वीएमएस (OpenVMS) प्रणाली की

अभी तक भारतीय रेलवे का पीआरएस इटेनयिम सर्वर और ओपन वीएमएस (OpenVMS) तकनीक पर आधारित था। यह तकनीक अब वैश्विक स्तर पर पुरानी हो चुकी है। इसकी जगह अब रेलवे पूरी तरह से आधुनिक और सुरक्षित क्लाउड आधारित सिस्टम (Cloud-Based System) को अपनाने जा रहा है।

क्लाउड तकनीक पर शिफ्ट होने के बाद रेलवे का डेटा न केवल अधिक सुरक्षित रहेगा, बल्कि इसकी कार्यक्षमता भी असीमति रूप से बढ़ जाएगी। जैसे डिजिटल दुनिया में चीजें बदल रही हैं, वैसे ही आप घर बैठे सरकारी दस्तावेजों में सुधार कर सकते हैं इसके लिए आप 2 मिनट में ऐसे बदलें आधार और पैन का पतावाली गाइड पढ़ सकते हैं।

सुपरफास्ट बुकिंग: एक मिनट में 1.5 लाख टिकट बुक करने की होगी

इस अपग्रेडेशन का सबसे बड़ा और सीधा फायदा टिकट बुकिंग की स्पीड पर दखिगा। पुराना पीआरएस सिस्टम एक मिनट में अधिकतम 32,000 टिकट ही बुक करने की क्षमता रखता है। तत्काल बुकिंग के समय यह सीमा बेहद कम साबित होती है और लाखों लोगों के पैसे कटने के बाद भी बुकिंग फेल हो जाती है।

बुकिंग क्षमता में 5 गुना से अधिक की बढ़ोतरी:

नया क्लाउड-आधारित सिस्टम लागू होने के बाद रेलवे प्रति मिनट 1.5 लाख टिकट बुक करने में सक्षम हो जाएगा। यह मौजूदा क्षमता से लगभग 5 गुना ज्यादा है। इसका मतलब है कि अब आईआरसीटीसी ऐप या वेबसाइट पर पेमेंट अटकने की समस्या न के बराबर रह जाएगी और यात्रियों को बेहद तेज गति से कॉन्फर्म टिकट मिल सकेगा।

त्योहारों पर नहीं होगा सर्वर डाउन , ट्रेन सर्च करने की रफ्त

दीपावली, होली, छठ पूजा या गर्मियों की छुट्टियों (Summer Vacation) जैसे त्योहारों और पीक सीजन के दौरान अक्सर सर्वर डाउन होने की शकियत आम होती है। नए सॉफ्टवेयर के जरिए इस समस्या का पूर्ण समाधान कर दिया गया है।

ट्रेन उपलब्धता और सीट सर्च करने की क्षमता को 4 लाख प्रतिमिनट से बढ़ाकर सीधे 40 लाख प्रतिमिनट किया जा रहा है। यानी सर्च करने की रफ्तार में 10 गुना का भारी इजाफा होगा। चाहे जितने भी लाख यूजर एक साथ वेबसाइट पर आ जाएं, सर्वर क्रैश नहीं होगा और लेटेस्ट अपडेट (Latest Update) तुरंत स्क्रीन पर दिखाई देगा। इस सुविधा से उन युवाओं को बहुत लाभ होगा जो परीक्षाओं के लिए यात्रा करते हैं ऐसे युवा 1 लाख भारती से CM योगी के फैसलेके बारे में भी पढ़ सकते हैं।

फ्लाइट की तर्ज पर मलिंगी सुविधा: यात्री खुद चुन सकेंगे अपनी

अभी तक रेलवे में टिकट बुक करते समय आपको केवल लोअर, मडिलि या अपीयर बर्थ चुनने का विकल्प मलिंगा था, लेकिन वह सीट आपको मलिंगी या नहीं, यह सॉफ्टवेयर तय करता था। नए सॉफ्टवेयर में एयरलाइंस (Airlines) की तरह एक पूराकोच लेआउट (Coach Layout) दिखाई देगा।

यात्री खाली सीटों को देखकर अपनी पसंद की सीट खुद चुन सकेंगे। इसके अलावा, यदि कोई पूरा परिवार या दोस्तों का ग्रुप एक साथ यात्रा कर रहा है, तो वे एक ही जगह पर पास-पास की सीटें आसानी से बुक कर पाएंगे। इससे सफर के दौरान अलग-अलग बोगियों में सीट मलिंगे की समस्या पूरी तरह समाप्त हो जाएगी।

फेयर कैलेंडर, क्षेत्रीय भाषाओं का सपोर्ट और दवियांगजनों के

नया सॉफ्टवेयर केवल स्पीड ही नहीं, बल्कि यूजर इंटरफेस (User Interface) को भी बेहद आसान और सुलभ बना देगा। इसमें कई ऐसी नई सुविधाएं जोड़ी जा रही हैं जो अब तक भारतीय रेलवे के ऐप में उपलब्ध नहीं थीं।

महत्वपूर्ण नए फीचर्स की सूची:

>> फेयर कैलेंडर (Fare Calendar): यात्री पूरे महीने का करिया एक साथ एक ही स्क्रीन पर देख सकेंगे, जिससे उन्हें सबसे सस्ते दिन का टिकट चुनने में मदद मलिंगी।

>> क्षेत्रीय भाषाओं का सपोर्ट: हिंदी और अंग्रेजी के अलावा देश की वभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में टिकट बुकिंग (Apply Online) की जा सकेगी।

>> दवियांगजन और मरीजों के लिए इंटीग्रेटेड सुविधाएं: वशिष श्रेणी के यात्रियों और मरीजों के लिए कोटे के तहत लोअर बर्थ का चयन और सत्यापन प्रक्रिया को बहुत सरल बना दिया गया है।

अगस्त से लागू हो सकता है नया सस्टिम, कंफर्म टिकट और रफिंड की

रेलवे अधिकारियों के अनुसार, इस नए क्लाउड-आधारित पैसेंजर रजिस्ट्रेशन सस्टिम को अगस्त 2026 से चरणबद्ध तरीके से लागू किया जा सकता है। इस सस्टिम के आने के बाद न केवल टिकट बुक करना आसान होगा, बल्कि टिकट कैंसिल (Ticket Cancellation) करने पर रफिंड (Refund) की प्रक्रिया भी बेहद तेज हो जाएगी। अब रफिंड के लिए दिनों का इंतजार नहीं करना पड़ेगा, बल्कि कुछ ही घंटों में पैसे सीधे बैंक खाते में ट्रांसफर हो जाएंगे।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय रेलवे द्वारा उठाया गया यह कदम डिजिटल इंडिया (Digital India) की दिशा में एक बहुत बड़ा मील का पत्थर साबित होगा। 1986 से चल रहे पुराने इंफ्रास्ट्रक्चर को हटाकर आधुनिक क्लाउड तकनीक अपनाना समय की मांग थी। इस नए बदलाव से जहां एक ओर दलालों की मनमानी पर रोक लगेगी, वहीं आम जनता को त्योहारों के समय बिना किसी मानसिक तनाव और सर्वर फेल की समस्या के अपनी यात्रा की प्लानिंग करने की पूरी आजादी मिलेगी।

महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर

रेलवे के आधिकारिक स्रोतों के अनुसार, नया क्लाउड-आधारित पैसेंजर रजिस्ट्रेशन सस्टिम (PRS) अगस्त 2026 से लागू होने की पूरी संभावना है।

पुराना सस्टिम 1986 के ओपन वीएमएस तकनीक पर आधारित था, जबकि नया सस्टिम पूरी तरह क्लाउड तकनीक पर चलेगा, जिससे इसकी गति और क्षमता कई गुना बढ़ जाएगी।

नए सस्टिम के माध्यम से प्रतिमिनट टिकट बुक करने की क्षमता 32,000 से बढ़कर सीधे 1.5 लाख हो जाएगी, जो कि पुरानी क्षमता से 5 गुना अधिक है।

हाँ, बिल्कुल। नए सस्टिम के अंतर्गत यात्रियों को ट्रेन कोच का पूरा ग्राफिकल लेआउट दिखाएगा, जिससे वे खाली सीटों को देखकर अपनी मनपसंद बर्थ खुद चुन सकेंगे।

नया क्लाउड नेटवर्क ट्रेन और सीटों को सर्च करने की क्षमता को 4 लाख से बढ़ाकर 40 लाख प्रतिमिनट कर देगा, जिससे अत्यधिक लोड होने पर भी सर्वर क्रैश नहीं होगा।

जी हाँ, एकीकृत डेटाबेस और तेज प्रोसेसिंग क्षमता की वजह से टिकट कैंसिल होने पर रफिंड की राशि कुछ ही घंटों के भीतर सीधे आपके मूल बैंक अकाउंट में आ जाएगी।